POLITICAL SCIENCE Dep.
B.A Part-I (HONS)
Paper-II

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College Tajpur,
Samastipur

सविनय अवज्ञा आंदोलन

गांधीजी ने 'यंग इंडिया' में एक लेख प्रकाशित कर सरकार के समक्ष ग्यारह सूत्रीय मांगें रखीं तथा इन मांगों को स्वीकार या अस्वीकार करने के लिए 31 जनवरी 1930 तक का समय दिया। फरवरी 1930 तक सरकार द्वारा इन मांगों के संबंध में कोई सकारात्मक उत्तर सरकार द्वारा नहीं मिला। अतः साबरमती में कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक हुई जिसमें गांधीजी ने 'नमक' के मुद्दे पर सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ने का निर्णय लिया। सरकार ने नमक पर भारी कर लगा दिया था जोकि अत्यंत अविवेकपूर्ण एवं अमानवीय था। नमक गरीब व्यक्ति को प्रभावित करता था साथ ही पूर्ण स्वराज्य के लिए सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ करना किसानों की समझ में भी नहीं आता था।

गांधीजी ने 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से अपने 78 समर्थकों के साथ नमक कानून तोड़ने हेतु पदयात्रा प्रारंभ की। 6 अप्रैल को गांधीजी ने समुद्रतट पहुंचकर नमक बनाकर कानून तोड़ा। गांधीजी की

Scanned with CamScanner

डांडी पदयात्रा के दौरान रास्ते में हजारों किसानों ने उनका संदेश सुना तथा कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की।

गांधीजी ने एक निर्देश जारी कर आंदोलन के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम प्रस्तुत किया —

1. जहां कहीं भी संभव हो, लोग नमक कानून तोड़कर नमक तैयार करें।
2. शराब की दुकानों, विदेशी कपड़े की दुकानों तथा अफीम के ठेकों के समक्ष धरने आयोजित किए जाए।
3. वकील अपनी वकालत छोड़ सकते हैं।
4. जनता न्यायालय का बहिष्कार कर सकती है।
5. सरकारी कर्मचारी अपने पदों से त्यागपत्र दे सकते हैं।
6. हर घर चरखा कातें और खुद बनायें।
7. छात्र सरकारी स्कूल कॉलेजों का बहिष्कार करें।
8. इन सभी कार्यक्रमों में साथ एवं अहिंसा को सर्वोपरि रखा जाए।
9. करों की अदायगी का विरोध कर सकते हैं।

Dr. Jhuma Ara
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College Tajpur
Samastipur

Scanned with CamScanner